मूल्य/धर्मार्थ : 1 पैसा
(केवल बहाईयों में वितरण हेतु)

बहाई समाचारपत्र

वर्ष : 54 अंक 8 | प्रकाशन : प्रत्येक माह की 8 तारीख
अगस्त 2018 | बहाई वर्ष : 175

विश्व न्याय मन्दिर

क्रियाकलापों में सीखने की स्थिति में रहने के लिए आवश्यक है कि सभी विनम्रता की अवस्था में रहें, वह दशा जिसमें व्यक्ति स्वयं को भूल जाता है, ईश्वर में पूर्ण भरोसा रखता है, ईश्वर की सर्वपोषणकारी शक्ति तथा उसकी अचूक सहायता में विश्वास, यह जानते हुए कि वह, मात्र वह ही, एक कीट को गरूड़ में, बूँद को समुद्र में बदल सकता है।

–रिज़वान 2010

बिहार में त्रिदिवसीय अन्तर्राज्यीय संस्थागत सम्मिलन सम्पन्न

राज्य बहाई परिषद्, बिहार के तत्वावधान में त्रिदिवसीय अन्तर्राज्यीय संस्थागत सम्मिलन 7 से 9 जुलाई, 2018 तक आयोजित किया गया, जिसमें विश्व न्याय मंदिर के सदस्य श्री प्रवीण कुमार मल्लिक, महाद्वीपीय सलाहकार श्री दृगपाल सिंह एवं राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा की महासचिव सुश्री नाज़नीन रौहानी की विशेष उपस्थिति रही। इसमें बिहार, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल एवं उड़ीसा के 60 मित्रों ने भाग लिया। सम्मिलन का आरम्भ सुमधुर प्रार्थनाओं, भक्तिपरक संगीत एवं परिषद् के स्वागत संभाषण से हुआ।

श्री प्रवीण कुमार मल्लिक ने अपने वक्तव्य में कहा कि बहाउल्लाह का प्रकटीकरण एवं उनकी दिव्य शिक्षा व्यक्ति, परिवार एवं समुदाय के रूपांतरण का कारण बने व व्यक्तिगत जीवन के प्रत्येक तत्वों को प्रभावित करे इस निमित्त समुदाय की वास्तविकता का पठन तथा बहाउल्लाह के दृष्टिकोण को समझना आवश्यक है। बहाउल्लाह की शिक्षा को हम स्वयं तथा समुदाय के जीवन में कैसे लागू करें यह हमारी क्षमता–निर्माण से संबंधित है। जो व्यक्ति, समुदाय एवं समुदाय–समूह जितना ज्यादा अपनी क्षमता का निर्माण, उसका उपयोग तथा उसकी पुनरावृत्ति करता है, वह उतना ही आगे बढ़ता है।

क्लस्टरों के अभिगमन के संदर्भ में श्री मल्लिक ने कहा कि युवावार्ता एवं युवा सम्मिलन एक उपकरण है क्लस्टरों के अभिगमन को गतिज़ता प्रदान करने के लिए तथा इस उपकरण का केन्द्रीभूत तत्व है–पुस्तक के निर्देश को समझना, ट्यूटर की गहरी समझ प्राप्त करना तथा अध्ययनवृत कक्षा एवं अभियान के संदर्भ में सीख अर्जित करना और ऐसी सीख केवल मानव संसाधन के लिए नहीं अपितु सम्पूर्ण मानवजाति के लिए हो।

वस्तुतः बड़ी संख्याओं को अपनाना एक सतत् प्रक्रिया है, जो सीधी एवं सामान्य होने के साथ–साथ गहरी होती है और भारत के 550 क्लस्टरों में हम इस प्रक्रिया में आगे बढ़ रहे हैं अतएव, अब हमें सीखना है कि कैसे हम बच्चों की कक्षाओं को अधिक–से–अधिक गाँवों में प्रणालीबद्ध तरीके से स्थापित कर सकते हैं; कैसे हम इस प्रक्रिया को आगे लेकर जायें तथा उसे प्रभावी बनायें; कैसे एक समुदाय एक स्वस्थ समुदाय बनकर उभरे; कैसे समुदाय में प्रेम, एकता बनी रहे तथा कैसे हम विकास के साथ–साथ जटिलताओं को व्यवस्थित कर सकें। इसके अतिरिक्त, कैसे हम प्रार्थना एवं उद्धरण की गहराई में जायें। बहाउल्लाह की 200वीं जयंती का व्यक्ति एवं समुदाय के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा है, हमें इसकी भी गहराइयों में जाना होगा और इसके लिए हमें सेवा क्षेत्र में उतरना होगा क्योंकि लोग अपने अनुभवों से ही सीख अर्जित करते हैं।

सम्मिलन में उपस्थित महाद्वीपीय

शेष पृष्ठ 3 पर



बिहार में आयोजित सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रतिभागी

इस अंक में

- बिहार में त्रिदिवसीय अंतर्राज्यीय संस्थागत सम्मिलन सम्पन्न 1
- लखनऊ में तीन दिवसीय संस्थागत बैठक
- ओडिशा में समीक्षा और संयुक्त परामर्श बैठक 2
- शिमला में संस्थान सम्मेलन का आयोजन 2
- समाचारचित्र 3
- शांति–संकल्प 4
- मंडया में पहला बहाई कोष सम्मेलन 4

लखनऊ में तीन दिवसीय संस्थागत बैठक

उत्तरप्रदेश, लखनऊ में क्षेत्रीय बहाई परिषद की ओर से तीन दिवसीय संस्थागत बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 300 मित्रगणों ने अपनी प्रतिभागिता दर्ज की। बैठक में उन्होंने इस बात पर चर्चा की कि किस प्रकार योजना के अनुरूप आगे बढ़ा जाये। यह बहुत ही

मित्रों ने काफी गहनता के साथ मूल–गतिविधियों की गुणवत्ता बढ़ाने और पुरानी गतिविधियों को फिर से शुरू करने के उपायों पर चर्चा की। उन्होंने अच्छी संख्या में अनुशिक्षकों को प्रशिक्षित करने की योजना भी बनाई ताकि वे क्लस्टर में शैक्षणिक गतिविधियों की देख–रेख कर सकें।



लखनऊ में आयोजित बैठक में उपस्थित मित्रों को संबोधित करते हुए सलाहकार दृगपाल सिंह

उपयोगी बैठक थी और अधिकांश चर्चा मूल–गतिविधियों की गुणवत्ता बढ़ाने, बंद पड़ी हुई गतिविधियों को फिर से शुरू करने और संयोजन की एक ऐसी प्रणाली विकसित करना, जिससे उन सब के साथ–साथ चला जाये जो मूल–गतिविधियों का संचालन कर रहे हैं, पर केन्द्रित रही।

इस बैठक में सलाहकार दृगपाल सिंह के अलावा राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा की महासचिव और एक सदस्य भी उपस्थित रहे। सलाहकार दृगपाल सिंह ने मूल–गतिविधियों, ख़ासकर किशोर कार्यक्रम की गुणवत्ता बढ़ाने के महत्व पर बल दिया, तो राष्ट्रीय सचिव ने बहाई जीवन जीने के महत्व की बातें कीं तथा विश्वासपात्रता, सत्यवादिता और पवित्रता जैसे गुणों को विकसित करने के बारे में बताया। उन्होंने समुदाय में एकता बनाये रखने के महत्व पर भी बल दिया।

प्रार्थना सभाओं का आयोजन करने वाले परिवारों के समूह की चर्चा करते हुये छोटे– छोटे समुदायों के निर्माण पर बल दिया गया जो अपने–अपने बच्चों, किशोरों और युवाओं के आध्यात्मिक स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

विचार–विमर्श का एक विषय यह भी था कि बाब और बहाउल्लाह के जन्मोत्सव किस प्रकार मनाये जायें और इन दो जन्मोत्सवों को एक साथ जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाये। मानवजाति के इतिहास में पहली बार हमें दो ईश्वरीय अवतार मिले हैं और प्रभुधर्म की यह अनूठी विशेषता जन्मोत्सवों के दौरान प्रकाश में लाई जाये।

आशा की जाती है कि अपने–अपने क्लस्टर में वापस जाकर मित्रगण अपनी योजना अन्य लोगों से साझा कर रहे हैं और अपने लक्ष्यों को पूरा करने की दिशा में काम शुरू कर दिया है।

ओड़िशा में समीक्षा और संयुक्त परामर्श बैठक

ओड़िशा राज्य बहाई परिषद और प्रशिक्षण संस्थान मण्डल को–ओर्डिनेटर्स की समीक्षा बैठक और क्लस्टर स्तर की एजेंसियों के साथ त्रैमासिक संयुक्त परामर्श का आयोजन 3 से 5 जुलाई, 2018 तक किया गया। इस बैठक में सहायक मंडल सदस्यों, राज्य बहाई परिषद के सदस्यों, प्रशिक्षण संस्थान मंडल, फेसिलिटेटर, को–ओर्डिनेटर्स और 14 क्लस्टर से चयनित स्थानीय आध्यात्मिक सभा के सदस्यों सहित 40 मित्रगण नए चक्र के अध्ययन, समीक्षा और योजना बनाने के लिए एकत्र हुए। एस्टारंग क्लस्टर के युवा मित्र भी बैठक में उपस्थित थे जो सभी प्रतिभागियों के लिए खुशी का स्रोत था।

बैठक प्रार्थनाओं के साथ शुरू हुई और ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट बोर्ड द्वारा क्षमता निर्माण पर तैयार दस्तावेज़ का अध्ययन किया और उसके बाद 30 जून 2018 तक प्रत्येक क्लस्टर की स्थिति की समीक्षा की गई।

अगले दिन सभी प्रतिभागियों ने अपने समूह की वर्तमान स्थिति पर समीक्षा की और शेष लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सभी स्तरों–स्थानीय, क्लस्टर और उप–क्षेत्रीय में गतिविधियों को त्वरित किये जाने पर विचार किया।

रिज़वान 2018 के संदेश का अध्ययन कर और उस पर चर्चा की गई। उसके उपरान्त सभी प्रतिभागियों को, उप–इकाइयों और क्लस्टर के अनुसार नए चक्र के लिए अपने लक्ष्यों को निर्धारित करने के लिए समूहों में विभाजित किया गया।

कार्यक्रम के अंतिम दिन, प्रत्येक समूह ने अपनी योजना प्रस्तुत की। 17 क्लस्टर के लिए बनाई गईं सभी योजनाओं की समीक्षा की गई। शेष समूहों पर चर्चा हुई और पायनियरों को भेजने के लिए छह क्लस्टर चुने गए और इसके लिए कुछ नाम सुझाए गए। परामर्श करते समय, प्रतिभागियों ने बताया कि कई मित्र कुछ प्रोत्साहन के साथ प्रभुधर्म की सेवा करने में सक्षम हैं और सक्रिय मित्रों को कुछ समय के लिए उनके साथ आने की आवश्यकता है। तब सभी प्रतिभागियों ने अपने मित्रों के 100 से अधिक नामों को सूचीबद्ध किया जो कम से कम गतिविधियों के वर्तमान चक्र के लिए सेवा के क्षेत्र में होंगे।

द्वितीय द्विशताब्दी उत्सव पर विश्व न्याय मन्दिर के 1 जून 2018 के संदेश का विस्तार से अध्ययन किया गया और बहाउल्लाह के द्विशताब्दी जन्म समारोह के दौरान प्राप्त किए गए अनुभवों पर परामर्श किया गया।

सभी क्लस्टर अपने संबंधित समूहों के साथ परामर्श के बाद अपनी योजनाओं को अंतिम रूप देंगे और उन्हें राज्य बहाई परिषद के साथ साझा करेंगे।



ओडिशा में आयोजित परामर्श बैठक में भाग लेने वाले प्रतिभागी

शिमला में संस्थान सम्मेलन का आयोजन

क्षेत्रीय बहाई परिषद पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और जम्मू एवं कश्मीर ने 30 जून और 1 जुलाई 2018 को शिमला में एक संस्थान सम्मेलन का आयोजन किया, जिसमें सात स्थानीय सभाओं के लगभग 40 मित्रों ने अपनी प्रतिभागिता दर्ज की। इनके अलावा सहायक मण्डल सदस्य, क्षेत्रीय समन्वयक और क्लस्टर समन्वयक भी मौजूद थे। शिमला में एक महीने के लिए पायनीयर के रूप में अपनी सेवायें दे रहे श्री मिश्रा ने रिज़वान संदेश और अन्य विषयों के अध्ययन को सुविधाजनक बनाने में मदद दी।

सत्र रिज़वान संदेश के अध्ययन के साथ शुरू हुआ जो कि द्विशताब्दी उत्सव के बारे में बताता है और दुनिया भर में इसका अनुसरण किया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप कई गुना गतिविधियां उभरती हैं, दूसरे और तीसरे मील के पत्थर पर पीजी क्लस्टर का अभिगमन, प्रशिक्षण संस्थान मण्डल की भूमिका, बाब के द्विशताब्दी उत्सव की तैयारी, समाज के प्रचलित संवादों में भाग लेने के लिए, दुनिया में सबसे हाल ही में समर्पित उपासना मंदिर और बहुत कुछ। मित्रों ने रिज़वान संदेशों के आधार पर अपने अनुभव साझा किए।

प्रोफेसर अनिल सरवाल ने बाब के द्विशताब्दी उत्सव के लिए खुद को तैयार करने के लिए उपस्थित मित्रों को प्रोत्साहित किया, क्योंकि बहाउल्लाह की द्विशताब्दी मनाते हुए बहुत सारे अनुभव प्राप्त हुए हैं। पांच वर्षीय योजना के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए दो द्विशताब्दी के बीच आठ चक्रों को अत्याधिक प्रयासों की आवश्यकता है।

श्री मिश्रा ने बहाई प्रशासन पर बात की और विशेष रूप से पांच वर्षीय योजना के संदर्भ में सभा की भूमिका क्या है और आगे सभा की कुछ जिम्मेदारियां साझा की गईं।

दूसरा दिन पूरी तरह से योजना सत्र के लिए समर्पित था, जिसमें आस–पास के समुदाय या पीजी क्लस्टर के साथ एक सक्रिय समुदाय दूसरे या तीसरे मील के पत्थर को स्थानांतरित करने में मदद करता है। सभा के सभी सदस्यों ने अपने संबंधित क्षेत्र के लिए संस्थान की गतिविधियों को तेज करने की तीन महीने की योजना बनाई, जिसकी अगले क्षेत्रीय सम्मेलन के दौरान समीक्षा की जाएगी।



शिमला में आयोजित संस्थान सम्मेलन के प्रतिभागी



हिमाचल प्रदेश के बेजा क्लस्टर में मई 2018 में किशोर मेले का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 65 मित्रों ने अपनी प्रतिभागिता दर्ज की।

समाचारचित्र



स्थानीय आध्यात्मिक सभा, जयपुर की ओर से 10 जुलाई, 2018 को बापू नगर स्थित बहाई भवन में बहाई धर्म के अग्रदूत व युगावतार 'दिव्यात्मा बाब' का शहीदी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर जयपुर के बहाईयों की आध्यात्मिक सभा द्वारा एक रक्तदान शिविर का भी आयोजन किया गया जहां युवाओं ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया व 30 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता नियाज आलम अनंत ने बाब के जीवन के बारे में बताया। अंत में डॉ. नेजात हग़ीगत ने सभी लोगों का धन्यवाद ज्ञापित किया।



क्षेत्रीय बहाई परिषद मणिपुर एवं मिजोरम ने 10 जुलाई 2018 को बाब के शहादत दिवस के अवसर पर डिपार्टमेंट ऑफ इम्यूनोहेमेटोलॉजी एंड ब्लड ट्रांसफ्यूजन, रीजनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, (आरआईएमएस) के सहयोग से मणिपुर ब्लड बैंक में 18वें रक्तदान शिविर का आयोजन किया, जिसमें 29 मित्रों ने रक्तदान किया। 17 युवा समाचार के माध्यम से प्रेरित होकर रक्तदान के लिए आये। स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं, स्थानीय समुदाय और सहायक मण्डल सदस्यों के सहयोग से कार्यक्रम सफल बन सका।



स्थानीय आध्यात्मिक सभा ग्वालियर ने 10 जुलाई को बाब के शहीदी दिवस पर बहाई भवन में एक भक्तिपरक बैठक का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पवित्र चयनित लेख, प्रार्थना और विशेष प्रार्थनाएं की गईं।

बिहार में त्रिदिवसीय अन्तर्राज्यीय संस्थागत सम्मिलन सम्पन्न

पृष्ठ 1 का शेष

सलाहकार श्री दृगपाल सिंह ने भी आपसी संबंध एवं तालमेल को प्रगति का सूचक बताते हुए सामंजस्य, त्याग, सहशिक्षकों का प्राथमिक संवर्ग आदि विषयक् पहलुओं पर मित्रों का मार्गदर्शन किया।

संस्थागत सम्मिलन के आयोजन हेतु परिषद का उत्साहवर्द्धन करते हुए राष्ट्रीय महासचिव ने बताया कि प्रभुधर्म के प्रसार एवं सुगठन को लेकर बिहार का दृष्टिकोण अब स्पष्ट है। उन्होंने बहाई पहचान को मजबूती प्रदान करने तथा समुदाय के आध्यात्मिक स्वास्थ्य पर बल देते हुए कहा कि संविदा में दृढ़ता एवं बहाई विधान का पालन अस्तु, स्वयं को एक आदर्श के रूप में प्रस्तुत करना, कथनी एवं करनी में अंतर न करना, विचारों की एकता इत्यादि सभी में आचरण की शुद्धता परमावश्यक है क्योंकि बहाउल्लाह का नियम हमारे लिए सुरक्षा कवच है।

परिषद सचिव, श्री ओम नमः शिवाय सिंह ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि आशीर्वादित सौन्दर्य के 200वें जन्मोत्सव के बाद विश्व न्याय मंदिर द्वारा प्रकाशित रिज़्वान संदेश–2018 के आलोक में जब हम अपने बहाई समुदाय के गतिविज्ञान का निरपेक्ष अवलोकन करते हैं तब वाकई में हमें ऐसा प्रतीत होता है कि बहाई समुदाय अब वैसा नहीं है जैसाकि वह वर्तमान पांच वर्षीय योजना के समारंभ में था बल्कि उसमें काफी आमूल–चूल परिवर्तन हुआ है। समुदाय अब अपने ध्येय एवं उद्देश्य के प्रति पहले से ज्यादा जागरूक हुआ है।

सम्प्रति, बिहार नये परिसीमन के अनुसार 3 उपक्षेत्र, 45 क्लस्टर, 6 ग्रुप ऑफ़ क्लस्टर, 195 समुदाय, 42 स्थानीय आध्यात्मिक सभा तथा 19 क्लस्टर विकास समिति के साथ कार्य कर रहा है तथा वर्तमान विश्वव्यापी प्रयासों में अभिकल्पित 5000 क्लस्टरों में बिहार का लक्षित क्लस्टर 35 है जिसमें 6 क्लस्टर तृतीय मील के पत्थर को तथा 13 क्लस्टर द्वितीय मील के पत्थर को पार कर चुका है तथा इस बात की प्रबल संभावना है कि जुलाई से सितम्बर, 2018 के मध्य 4 और नये क्लस्टर द्वितीय मील के पत्थर को पार कर जायेगा।

पश्चिम बंगाल के मित्रों ने बताया कि पश्चिम बंगाल 4 उपक्षेत्र, 34 क्लस्टर एवं 189 समुदाय के साथ कार्य कर रहा है जहां द्वितीय मील के पत्थर वाले क्लस्टरों की संख्या 13 एवं प्रथम मील के पत्थर वाले क्लस्टरों की संख्या 11 है। ज्ञातव्य हो कि सामुदायिक विद्यालय कार्यक्रम के तहत् यहाँ कुल 8 सामुदायिक विद्यालय है जिसमें 23 शिक्षक सेवारत हैं।

झारखण्ड के मित्रों ने भी सार–संक्षेप में बताया कि झारखण्ड सम्प्रति, 2 ग्रुप ऑफ़ क्लस्टर तथा 11 क्लस्टर के साथ कार्य कर रहा है जिसमें तृतीय मील के पत्थर वाले क्लस्टरों की संख्या 1, द्वितीय मील के पत्थर वाले क्लस्टरों की संख्या 6 एवं प्रथम मील के पत्थर वाले क्लस्टरों की संख्या 4 है।

उड़ीसा के मित्रों ने भी अपने राज्य के अवलोकन के क्रम में बताया कि उड़ीसा 3 उपक्षेत्र, 31 क्लस्टर एवं 138 समुदाय के साथ कार्य कर रहा है जहां तृतीय मील के पत्थर वाले क्लस्टरों की संख्या 3, द्वितीय मील के पत्थर वाले क्लस्टरों की संख्या 18 एवं प्रथम मील के पत्थर वाले क्लस्टरों की संख्या 4 है।

लर्निंग साईट के संदर्भ में मित्रों ने बताया कि भारत में 6 तथा नेपाल में 1 अर्थात कुल 7 लर्निंग साईट कार्यरत हैं। भारत के अन्तर्गत कार्यरत बिहारशरीफ़ लर्निंग साईट बिहार के 6 क्लस्टर, झारखण्ड के 1 क्लस्टर, उड़ीसा के 2 क्लस्टर एवं अंडमान के 1 क्लस्टर अर्थात कुल 10 क्लस्टरों के साथ नजदीकी से कार्य कर रही है।

सम्मिलन के दूसरे दिन प्रथम दिन के कार्यक्रमों के समीक्षोपरांत श्री मल्लिक ने कहा कि वर्ष 2001 में क्लस्टर की संकल्पना प्राप्त होने के बाद प्रसार एवं सुगठन की प्रक्रिया काफी आसान हो गई है। उन्होंने भारत को लोगों का देश बताते हुए कहा कि बहाउल्लाह का प्रकटीकरण लोगों के लिए हुआ है। अतएव, हमें अपने समुदाय की वास्तविकता का अध्ययन करना होगा ताकि हम इस तथ्य का आकलन कर सकें कि उस समुदाय में प्रभुधर्म की विस्तार की क्या संभावनायें हैं, क्योंकि वास्तविकता के पठन का उद्देश्य बहाउल्लाह की शिक्षा के अनुरूप समुदाय की वर्तमान व्यवस्था को रूपांतरित करना है।

सम्मिलन के आखिरी दिन सामुदायिक विद्यालय पर सोल के कार्यक्रम संयोजक की प्रस्तुति हुई। प्रस्तुति के क्रम में गाँव, क्लस्टर एवं राज्य स्तरीय समन्वय की आवश्यकता, मानव संसाधन/शिक्षकों की पहचान करने, उनके साथ–साथ चलने एवं समुदाय व अभिभावकों के साथ बेहतर संबंध स्थापित करने संबंधी कई पहलुओं पर चर्चा की गई।

दिव्यात्मा बाब की 200वीं जयंती विषयक् पहलुओं पर भी विश्व न्याय मंदिर के सदस्य द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। अंत में इस सम्मिलन को सफल बनाने में लगे स्वयंसेवकों का उत्साह संवर्द्धन करने हेतु श्री प्रवीण कुमार मल्लिक द्वारा उपहार प्रदान कराया गया तद्नोपरांत परिषद् अध्यक्ष द्वारा धन्यवादज्ञापन एवं समापन प्रार्थना के बाद कार्यक्रम की पूर्णाहुति की घोषणा की गई।

Regd. No. DELHIN / 1966 / 04204
New Delhi P.S.O.
Delhi Postal Regd No. DL (ND) 11/6036/2018-19-20
Licensed to post without pre-payment No. U (C)-52/2018-19-20

शांति–संकल्प

हार्दिक प्रेम और सहानुभूति से मतभेदों को भुलाया जा सकता है और दुनिया में एकता तथा शांति का माहौल बनाया जा सकता है– इस सिद्धांत पर आधारित ईसाइयों की धर्मस्थली असीसी (इटली) में विश्व के प्रमुख धर्मों के लोग साथ–साथ काम करेंगे और एक बेहतर दुनिया बनायेंगे। उन्होंने यह सुरक्षा संस्थान के अमेरिका स्थित अध्यक्ष, स्वामी चिदानन्द सरस्वती, साध्वी भगवती सरस्वती, सूफी विश्व परिषद की श्रीमती ब्रीजेट वोन बारन और पीर शबदा खान, प्रोफेसर जॉनथन ग्रेनोफ, गुरू निष्काम सेवक जत्था के नेता भाई साहब, चिश्ती फाउण्डेशन के संस्थापक सैय्यद सलमान चिश्ती, मोहन संस्थान के



इटली में आयोजित कार्यक्रम में भाग लेने वाले प्रतिनिधिगण

संकल्प लिया कि एक शांति–संकल्प दुनिया के धार्मिक नेताओं, संयुक्त राष्ट्र संघ, सांसदों, प्रशासकों तक पहुँचायेंगे और उन्हें आमंत्रित करेंगे कि उनके प्रयास में वे सहयोग करें और हार्दिक प्रेम, दयालुता, सहानुभूति, क्षमा और सामंजस्य के महत्व का समर्थन करें। वे यह मानते हैं कि यह सत्य है और परिवर्तन लाने की ताकत रखती है, सार्वभौमिक है। इस बैठक में जलवायु परिवर्तन जैसे मुख्य विषय के बारे में गंभीरता से चर्चा की और मुख्य केन्द्र बिन्दु पानी की समस्या था, जिसके लिए ग्रीनलैंड के जल और भारत की गंगोत्री के जल का मिलन किया गया।

असीसी के शांति–संकल्प सम्मेलन में तुर्की के बिशॉप, विश्व मोहन जी और बहाई प्रतिनिधियों में भारत के डा. ए. के. मर्चेंट तथा इटली के मारियो सियाफिलुगिओ प्रतिभागियों में शामिल थे। डॉ. मर्चेंट ने उपस्थित सभी सज्जनों को बहाई संदेश दिया और बहाउल्लाह के बारे में बताया।

शांति–संकल्प परियोजना एक अन्तर्धर्म पहल है जिसकी शुरूआत अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के पूर्व निदेशक और नीदरलैण्ड के भूतपूर्व उप–प्रधानमंत्री ने सैकड़ों धार्मिक नेताओं के सहयोग से की है।

यह शांति–संकल्प आगामी कुम्भ मेले में लाखों तीर्थयात्रियों के साथ साझा किया जायेगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की शुभकामनायें भी शांति–संकल्प के संदेशवाहकों को मिल चुकी हैं।

निवेदन

मित्रों, अपने समुदायसमूह में होने वाली मूल गतिविधियों की रिपोर्ट तथा प्रेरणादायक घटनायें फोटोग्राफ के साथ हमें समय–समय पर भेजते रहें, जिससे की हम उन्हें अपने बहाई समाचारपत्र में प्रकाशित कर सकें।

धन्यवाद !

मंडया में पहला बहाई कोष सम्मेलन

कर्नाटक की राज्य बहाई परिषद ने 8 जुलाई को मंड्या में अपना पहला बहाई फंड सम्मेलन आयोजित किया। यह सम्मेलन विशेष रूप से मैसूर से कंगेरी तक 90 किलोमीटर के क्षेत्र के लिए था, जिसमें बड़ी संख्या में बहाई समुदाय है। सम्मेलन कन्नड़ भाषा में गए और इस क्षेत्र के कई दोस्तों को दिए गये। इसके अलावा, आमंत्रित करने के लिए व्हाट्सएप का भी इस्तेमाल किया गया। नाश्ता, दोपहर का भोजन और चाय की व्यवस्था की गई थी।

सम्मेलन के कार्यक्रम में प्रार्थनाएं, बहाई कोष पर चर्चा, गहन



मंडया में आयोजित सम्मेलन के प्रतिभागी प्रसन्नचित्त मुद्रा में

आयोजित किया गया था, जिसमें लगभग 35 मित्रों ने भाग लिया।

सम्मेलन में परिषद ने एक कोष विकास कार्य बल नियुक्त किया। परामर्श के बाद कार्य बल ने फैसला किया कि बहाई कोष के बारे में मित्रों को शिक्षित करने का सबसे प्रभावी तरीका, गुजरात बहाई समुदाय के सफल प्रतिमान की तरह, सम्मेलन आयोजित करना है। पहला सम्मेलन मंड्या में नियोजित किया गया था, जो न तो बहुत ज्यादा और न ही बहुत कम मित्रों को आकर्षित करेगा। इस सम्मेलन का अनुभव बाद के सम्मेलनों की योजना बनाने के लिए उपयोग किया जाएगा। पांच अलग–अलग स्थानों पर व्यक्तिगत यात्राओं के बाद एक स्थल की पहचान की गई। यह स्थान एक हॉल था जहां बच्चों की गतिविधियों के लिए एक अलग जगह थी, ऑडियो सिस्टम की सुविधा थी, और इसका बहुत ही उचित मूल्य था। आमंत्रण कार्ड डिजाइन किए कार्यशाला जिसमें फंड के विभिन्न पहलुओं पर उद्धरण शामिल थे, जिसमें रोचक और विचार–विमर्श करने वाले प्रश्नों को भी शामिल किया गया था, परिषद की प्रमुख गतिविधियों और इन गतिविधियों की मौद्रिक आवश्यकताओं पर परिषद की एक प्रस्तुति शामिल थी। सम्मेलन में युवाओं की मौजूदगी महत्वपूर्ण थी, क्योंकि उन्होंने खेल–सत्र आयोजित किया था और बच्चों के लिए गतिविधियों का संचालन करने में भी मदद की थी।

इस सम्मेलन के लिए कोई पंजीकरण शुल्क नहीं लिया गया था, लेकिन सम्मेलन के खर्च में मित्रों को योगदान देने के लिए आमंत्रित किया गया था। यह राज्य में अपनी तरह का पहला सम्मेलन था। लगभग 22 व्यक्तियों/परिवारों द्वारा 1.13 लाख देने का वचन दिया गया। सम्मेलन वित्तीय रूप से आत्मनिर्भर था।

कुल पृष्ठ संख्या–4
बहाई समाचारपत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से संबंधित फार्म – 4, नियम 8

समाचार का नाम : बहाई समाचारपत्र
रजि नं. : DELHIN / 1966 / 4204 यू नं. (C)-52/2018-19-20
डी.एल. DL (ND) 11/6036/2018-19-20
प्रकाशक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
(बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1)
प्रकाशन स्थान : बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1

मुद्रक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1
मुद्रण स्थान : श्री मंगलम प्रिंटर्स, एफ–25, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110020
उन व्यक्तियों के नाम जो समाचारपत्र स्वामी हों : राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को इसका स्वामित्व प्राप्त है, जो सोसायटीज़ एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है।

Licenced to post without Pre-Payment Posted at CPSO New Delhi on 10/11.8. 2018
Sender's Address:
6, Shrimant Madhavrao Scindia Marg.
New Delhi - 110 001 - INDIA

स्वामी, भारत के बहाईयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा, जो सोसायटीज एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है, के लिए प्रकाशक, मुद्रक : सुशील कुमार के द्वारा श्री मंगलम प्रिंटर्स, एफ–25, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110 020 से मुद्रित एवं बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–110 001 से प्रकाशित (सम्पादक : सुशील कुमार)